RAF SECTOR

NEWS CLIP

09/01/20

TO SERVE HUMANITY WITH SENSITIVE POLICING

Hindustan Meerut (UP)

घाटी में पत्थरबाजों से निपटने के गुर सीखेगी जम्मू-कश्मीर पुलिस

मेरठ | सचिन गुप्ता

घाटी में पत्थरबाजों से कैसे निपटना है, यह जम्मू-कश्मीर पुलिस मेरठ में सीखेगी। जम्मू-कश्मीर पुलिस के एक डीएसपी, 12 दरोगा और 300 जवान मंगलवार को मेरठ पहुंच गए हैं। ये रैपिड एक्शन फोर्स (आरएएफ) की 108 बटालियन परिसर में 'भीड़ नियंत्रण' पर आज से शुरू होने जा रहे इंटरनेशनल कोर्स में शामिल होंगे।

मेरठ में आरएएफ एकेडमी फॉर पब्लिक ऑर्डर इंस्टीट्यूट (रेपो) देश का एकमात्र दंगा प्रशिक्षण केंद्र है। पिछले दिनों ही विदेश मंत्रालय और गृह मंत्रालय ने इस केंद्र को 'भीड़ नियंत्रण' पर इंटरनेशनल कोर्स चलाने के लिए हरी झंडी दी है। आरएएफ-108 के कमांडेंट शैलेंद्र कुमार ने बताया कि दूसरे चरण में जम्मू-कश्मीर पुलिस के जवानों को ट्रेनिंग दी जाएगी। उस राज्य पुलिस के 300 जवान, 12 सब इंस्पेक्टर व एक डीएसपी ट्रेनिंग लेने के लिए मंगलवार को आरएएफ कैंपस मेरठ पहुंच गए हैं।

इनकी 12 दिवसीय ट्रेनिंग बुधवार से शुरू होगी। आर्म्ड फोर्स के एक्सपर्ट्स इन्हें बताएंगे कि घाटी में पत्थरबाजों पर कैसे काबू पाया जाएगा। यदि भीड़ इकट्ठा है तो वह उसे कैसे काबू करेंगे। 12 दिन की ट्रेनिंग में कश्मीर पुलिस के जवानों को आरएएफ के तमाम ऑपरेशन दिखाए जाएंगे। पिछले दिनों घाटी में शांति स्थापित करने के लिए मेरठ-अलीगढ़ से आरएएफ गई थी। उस दौरान के फोटो-वीडियो भी इस कोर्स का हिस्सा बनेंगे।

शांति व्यवस्था में सर्वोत्तम है आरएएफ

रैपिड एक्शन फोर्स, सीआरपीएफ का एक हिस्सा है। 10 अक्तूबर 1992 को इसकी स्थापना हुई थी। वर्तमान में इसकी कुल 15 बटालियन हैं। इन इकाइयों को दंगों और ऐसी स्थितियों से निपटने के लिए स्थापित किया गया था, ताकि समाज के सभी वर्गों के बीच विश्वास पैदा हो सके और आंतरिक सुरक्षा ड्यूटी भी संभाल सके। आरएएफ ऐसा बल है, जो कम से कम समय में संकट की स्थिति में पहुंच जाता है। इसे शांति का प्रतीक होने का श्रेय भी है। 7 अक्तूबर 2003 को भारत के तत्कालीन उपप्रधानमंत्री लालकृष्ण आडवाणी ने शांति ध्वज आरएएफ को भेंट किया था। आरएएफ ने हैती, कोसोवो, लाइबेरिया जैसे देशों में संयुक्त राष्ट्र शांति मिशन चलाए हैं।

भीड़ में फंसें तो खुद को ऐसे निकालें

आरएएफ की असिस्टेंट कमांडेंट सोनिया बताती हैं कि जब कोई इंसान घिर जाए तो भीड़ को समझाने की बजाय उस जगह से दूर निकलने का रास्ता करना चाहिए। वो कहती हैं कि उग्र भीड़ के पास सोचने-समझने की शक्ति नहीं रहती। एक 'डरो या मरो' वाली स्थिति बन जाती है, इसलिए घिरे हुए युवक को दौड़कर ऐसा कोई स्थान ढूंढना चाहिए, जहां वह खुद को सुरक्षित रख सके। इसके बाद वह सबसे पहले किसी भी तरह आपात नंबर डायल करके सूचित करे।

Photos of Deployment/ Fam-Ex Of RAF

सी0आर0पी0एफ0 सदा अजेय, भारत माता की जय।